पाठ 10: मन्नू भंडारी (एक कहानी यह भी)

पाठ का सार (Summary):
यह मन्नू भंडारी की आत्मकथा का एक अंश है। इसमें उन्होंने अपने बचपन, अपने माता-पिता के स्वभाव और आज़ादी के आंदोलन में अपने योगदान का वर्णन किया है। लेखिका के पिता पहले बहुत उदार थे, लेकिन बाद में आर्थिक संकटों के कारण उनका स्वभाव शक्की, क्रोधी और अहंकारी हो गया। वे लेखिका की बड़ी बहन सुशीला (जो गोरी थी) को अधिक प्यार करते थे, जिससे काली और दुबली लेखिका के मन में गहरी हीन-भावना (Inferiority complex) पैदा हो गई। कॉलेज में पहुँचने पर उनकी हिंदी की प्राध्यापिका (Teacher) 'शीला अग्रवाल' ने लेखिका के अंदर आत्मविश्वास जगाया और उन्हें साहित्य की दुनिया से जोड़ा। 1946-47 के स्वाधीनता आंदोलन में लेखिका ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, हड़तालें करवाईं और सड़कों पर भाषण दिए, जिसका उनके पिता ने पहले बहुत विरोध किया लेकिन बाद में उन्हें अपनी बेटी पर गर्व भी हुआ।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. **लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?**

लेखिका (मन्नू भंडारी) के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से दो व्यक्तियों का गहरा प्रभाव पड़ा:

1. पिता का प्रभाव: पिता के गुस्सैल, शक्की और अहंकारी स्वभाव का लेखिका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। वे लेखिका की बड़ी बहन की तुलना में लेखिका के साँवले रंग को नापसंद करते थे, जिसके कारण लेखिका के अंदर ताउम्र एक 'हीन-भावना' (Inferiority complex) घर कर गई। हालाँकि, पिता ने ही उन्हें रसोईघर से दूर रखकर देश की राजनीति से जोड़ने की आज़ादी भी दी थी।

2. प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव: कॉलेज की हिंदी टीचर शीला अग्रवाल ने लेखिका के जीवन में एक जादू का काम किया। उन्होंने लेखिका को अच्छे साहित्य की पहचान कराई, बहस करना सिखाया और उनके अंदर ऐसा आत्मविश्वास जगाया कि लेखिका की सारी हीन-भावना दूर हो गई और वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से कूद पड़ीं।

प्रश्न 2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोईघर को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

भटियारखाना उस स्थान को कहते हैं जहाँ दिन-रात आग जलती रहती है और केवल पकाने-खाने का काम होता है। लेखिका के पिता नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी रसोई की चारदीवारी में कैद होकर अपनी प्रतिभा को नष्ट कर दे। उनका मानना था कि रसोईघर में काम करने से लड़कियों की क्षमताएँ और उनके असली गुण जलकर राख हो जाते हैं। वे चाहते थे कि लेखिका रसोई के कामों से दूर रहकर देश-दुनिया की घटनाओं (राजनीति और समाज) के बारे में जाने और जागरूक बने। इसीलिए उन्होंने रसोईघर को 'भटियारखाना' कहा।

प्रश्न 3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

एक बार लेखिका के कॉलेज से पिता के नाम एक पत्र आया जिसमें शिकायत की गई थी कि मन्नू भंडारी के नेतृत्व में लड़कियाँ हड़ताल कर रही हैं और अनुशासन बिगाड़ रही हैं। पत्र पढ़कर पिता अत्यंत क्रोधित हुए और बड़बड़ाते हुए कॉलेज गए। लेखिका डर के मारे पड़ोस में छिप गई कि आज पिता बहुत मारेंगे। लेकिन जब पिता कॉलेज से लौटे, तो वे गुस्से में नहीं बल्कि बहुत खुश और गर्वित थे। उन्होंने बताया कि पूरे कॉलेज की लड़कियाँ मन्नू के इशारे पर चलती हैं और उसने अपनी आवाज़ से सबको प्रभावित कर रखा है। पिता के मुँह से अपनी तारीफ और उनका यह बदला हुआ गर्वित रूप देखकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न ही अपने कानों पर।

प्रश्न 4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

लेखिका और उनके पिता के विचारों में गहरा टकराव (Conflict) था:

1. पिता चाहते थे कि लेखिका देश-दुनिया की खबर रखे, लेकिन वे यह सब घर की चारदीवारी के अंदर रहकर ही करें। जबकि लेखिका सड़कों पर उतरकर नारे लगाना, जुलूस निकालना और आज़ादी के आंदोलन में खुलकर भाग लेना चाहती थीं।

2. पिता समाज में मान-सम्मान और अपनी 'प्रतिष्ठा' (Status) को सबसे ऊपर मानते थे, उन्हें डर था कि बेटी के सड़कों पर घूमने से उनकी बदनामी होगी। लेकिन लेखिका के लिए आज़ादी का जोश और स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनना सबसे महत्त्वपूर्ण था।

इसी स्वतंत्रता (आज़ादी) की सीमा को लेकर पिता और पुत्री में हमेशा वैचारिक टकराहट बनी रहती थी।

प्रश्न 5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

सन् 1946-47 का समय भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का चरम (Peak) समय था। देश भर में आज़ादी का जोश उफान पर था। प्रभात फेरियाँ, जुलूस, हड़तालें, और भाषण हर जगह की आम बात बन गए थे।

मन्नू जी की भूमिका: मन्नू भंडारी (लेखिका) ने इस आंदोलन में अत्यंत सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने कॉलेज की लड़कियों को संगठित किया और हड़तालें करवाईं। वे सड़कों और चौराहों पर खड़े होकर आज़ादी के समर्थन में जोशीले भाषण देती थीं और नारे लगाती थीं। उनका भाषण इतना प्रभावशाली होता था कि लोग उन्हें सुनने के लिए रुक जाते थे। उन्होंने घर की चारदीवारी लाँघकर एक युवा और आज़ाद विचारों वाली लड़की के रूप में स्वाधीनता संग्राम में अपना पूरा योगदान दिया।

© 2026 schorbit.com. All rights reserved.
Prepared exclusively for Schorbit Students